जननी जन्मभूमिश्च
स्वर्गादपि गरीयसी

जो हठि राखै धर्म को,
तिहिं राखै करतार

बी.एड्. विभाग
महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर के
तत्वावधान में

राष्ट्रीय शिक्षा नीति : संकल्प से सिद्धि तक
विषय पर आयोजित
दो दिवसीय
राष्ट्रीय संगोष्ठी

मार्गशीष शुक्ल पक्ष त्रयोदशी एवं चर्तुदशी, युगाब्ध-5125, वि.सं. 2080
तद्नुसार 7 एवं 8 अक्टूबर, 2023 ई.

सेवा में,

_____

_____

_____

प्रेषक :
डॉ. प्रदीप कुमार राव
प्राचार्य/अध्यक्ष, आयोजन समिति
महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर-273 014

Website : www.mpm.edu.in
E-mail : nationalseminarnep@mpm.ac.in

परामर्शदात्री समिति

प्रो. डी.पी. सिंह
पूर्व अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
शिक्षा सलाहकार, माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश शासन

प्रो. रमाशंकर दुबे
कुलपति, केन्द्रीय विश्वविद्यालय
गुजरात

प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी
कुलपति, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजाति विश्वविद्यालय
अमरकंटक, छत्तीसगढ़

प्रो. के.एन. सिंह
कुलपति, केन्द्रीय विश्वविद्यालय
दक्षिणी बिहार, गया, बिहार

मेजर जनरल (डॉ.) अतुल बाजपेई
कुलपति, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय
गोरखपुर

प्रो. हरिकेश सिंह
पूर्व कुलपति, सी.जे.पी. विश्वविद्यालय
छपरा, बिहार

प्रो. मज़हर आसिफ
प्रोफेसर एवं डीन, स्कूल आफ लैंग्वेज लिट्रेचर एण्ड कल्चर स्टडीज,
जे.एन.यू., नई दिल्ली

प्रो. हरिशंकर सिंह
अध्यक्ष एवं डीन, स्कूल ऑफ एजुकेशन
बाबासाहब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ, उ.प्र.

प्रो. शोभा गौड़
अध्यक्ष एवं डीन, शिक्षा संकाय
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

प्रो. राजशरण शाही
शिक्षाशास्त्र विभाग
बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ

डॉ. वी. रामानाथन
सहायक आचार्य, आई.आई.टी., बी.एच.यू.
वाराणसी, उ.प्र.

डॉ. रामानन्द
निदेशक, सेंटर फार पालिसी रिसर्च एण्ड गवर्नेंस
नई दिल्ली

आयोजन समिति

मुख्य संरक्षक

पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज
मा. मुख्यमंत्री, उ.प्र. शासन
प्रबन्धक, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

संरक्षक

प्रो. उदय प्रताप सिंह
अध्यक्ष, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर
पूर्व कुलपति, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उ.प्र.

प्रो. राजेश सिंह
कुलपति, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र.

अध्यक्ष

डॉ. प्रदीप कुमार राव
प्राचार्य, महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

संयोजक/सचिव

शिप्रा सिंह
अध्यक्ष, बी.एड्. विभाग, महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

सदस्य

डॉ. विजय चौधरी
श्री नन्दन शर्मा
श्रीमती पुष्पा निषाद
सुश्री दीप्ति गुप्ता
डॉ. सलिल कुमार पाण्डेय
श्रीमती विभा सिंह
श्री रमाकान्त दूबे
डॉ. हनुमान प्रसाद उपाध्याय
डॉ. नीलम गुप्ता
डॉ. अभय प्रताप सिंह
डॉ. इक्ष्वाकु प्रताप सिंह
श्री अभिनव त्रिपाठी
श्री अभिषेक त्रिपाठी
श्री उपेन्द्र मणि त्रिपाठी
श्री अनूप कुमार पाण्डेय
श्री सिद्धार्थ कुमार शुक्ला
श्री रितेन्द्र नाथ पाण्डेय
श्री भारत कुमार
श्री विवेक विश्वकर्मा
सुश्री साक्षी चौबे
डॉ. आरती सिंह
डॉ. सुबोध कुमार मिश्र
डॉ. मंजेश्वर
डॉ. अनुभा श्रीवास्तव
श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह
श्री जितेन्द्र कुमार प्रजापति
डॉ. वेंकट रमन पाण्डेय
डॉ. शालू श्रीवास्तव
डॉ. सुधा शुक्ला
श्री हरिकेश यादव
सुश्री रितिका त्रिपाठी
श्री अरविन्द कुमार मौर्य
डॉ. सत्येन्द्र नाथ शुक्ल
श्रीमती श्वेता
डॉ. दीपशिखा नागवंशी
सुश्री शिवानी सिंह
डॉ. अर्चना गुप्ता
डॉ. भावना पाण्डेय
डॉ. संदीप श्रीवास्तव
सुश्री स्मृति सिंह

जननी जन्मभूमिश्च
स्वर्गादपि गरीयसी
जो हठि राखै धर्म को,
तिहिं राखै करतार

बी.एड्. विभाग
महाराणा प्रताप महाविद्यालय

जंगल धूसड़, गोरखपुर के
तत्वावधान में

राष्ट्रीय शिक्षा नीति : संकल्प से सिद्धि तक

विषय पर आयोजित
दो दिवसीय

राष्ट्रीय संगोष्ठी

मार्गशीष शुक्ल पक्ष त्रयोदशी एवं चर्तुदशी, युगाब्ध-5125, वि.सं. 2080
तद्नुसार 7 एवं 8 अक्टूबर, 2023 ई.

महाराणा प्रताप महाविद्यालय

जंगल धूसड़ - गोरखपुर

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

Website : www.mpm.edu.in
E-mail : nationalseminarnep@mpm.ac.in

राष्ट्रीय शिक्षा नीति : संकल्प से सिद्धि तक

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की संकल्पना क्रमशः साकार हो रही है। शिक्षा को राष्ट्र निर्माण के एक महत्त्वपूर्ण माध्यम के रूप में विकसित किया जा रहा है। इस शिक्षा नीति को लागू हुए तीन वर्ष पूरे हो चुके हैं। विश्वविद्यालयों एवं शिक्षण संस्थानों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के कार्यान्वयन पर अत्यन्त प्रयत्न हो रहे हैं। भारत सरकार एवं राज्य सरकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्यान्वयन को लेकर अत्यन्त गम्भीर हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के कार्यान्वयन को सीधे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा मानिटरिंग किया जा रहा है। अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के कार्यान्वयन पर अनवरत विचार विमर्श एवं अनुभव आधारित सुझाव आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का यह चौथा वर्ष हमें आत्म मूल्यांकन का एक अवसर प्रदान करता है। जिसमें हमें देखना है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन की दिशा क्या हैं, और यह किस प्रकार हमारी नई पीढ़ी को गढ़ने जा रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा के उद्देश्य एवं लक्ष्य को पुनः परिभाषित किया है। हमारा देश, जो अपने में अथाह ज्ञान का भण्डार समाए हुए है, उन ज्ञान रश्मियों को पुनः पाने एवं उन्हें जन–जन तक पहुँचाने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 भाषा, रचनात्मक संकल्पना एवं संवेदनात्मक तत्वों पर विशेषतः जोर दे रही है। यह सत्य है कि मनुष्य के व्यक्तित्व में सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों तत्व समाहित होते हैं। वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया में नकारात्मक तत्वों को क्षीण कर, सकारात्मक विकास की प्रक्रिया को तीव्र करने की दिशा में अग्रसर है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत ऐसे पाठ्यक्रम तैयार किए जा रहे हैं, जिनसे छात्रों के भीतर अपनी संस्कृति, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, जीवन मूल्य का विकास हो सके तथा संगीत और अन्य कला के माध्यम से उनकी रचनात्मकता एवं संवेदना को परिष्कृत किया जा सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति भीतर से खोती जा रही मौलिकता को वापस लौटाने की वृहत्तर परियोजना है।

किसी भी नीति की प्रभावशीलता उसके कार्यान्वयन पर निर्भर करती है। ऐसे में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 को अपने संकल्प से सिद्धि की ओर अग्रसर करने पर विचार विमर्श करने हेतु महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर ने **''राष्ट्रीय शिक्षा नीति : संकल्प से सिद्धि तक''** विषय पर 7–8 अक्टूबर 2023 को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी कराने का निर्णय लिया है। इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में शोधार्थी संगोष्ठी के विविध आयामों के किसी भी विषय/शीर्षक पर अपना शोध पत्र दे सकते हैं। सुविधा की दृष्टि से उपरोक्त विषय को निम्न उपविषयों/शीर्षकों में विभाजित किया गया है–

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 तथा प्राथमिक शिक्षा।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति में स्कूली शिक्षा प्रणाली एवं उसके कार्यान्वयन की दिशा।
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति में गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयी शिक्षा का स्वरूप एवं कार्यान्वयन की दिशा।
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की अद्यतन विकास यात्रा।
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षक शिक्षा और उसके कार्यान्वयन की दिशा।
6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति में व्यावसायिक शिक्षा का कार्यान्वयन।
7. राष्ट्रीय शिक्षा नीति और स्वास्थ्य शिक्षा।
8. राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आलोक में तकनीकी शिक्षा।
9. राष्ट्रीय शिक्षा नीति में दूरस्थ शिक्षा।
10. राष्ट्रीय शिक्षा नीति में परीक्षा एवं मूल्यांकन।
11. राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शोध।

शोध-प्रपत्र

संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध–प्रपत्र/आलेख में विषय वस्तु का उद्देश्य, सार–संक्षेप, बीज शब्द, प्रयुक्त विधितन्त्र एवं निष्कर्ष का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए। सूचना प्रपत्र में निर्दिष्ट विषयों की सीमा में ही शोध–प्रपत्र स्वीकृत किये जायेंगे। शोध–पत्र हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में स्वीकृत होंगे। शोध–पत्र/आलेख लगभग 2500 शब्दों में होना चाहिए तथा 15 सितम्बर 2023 तक ई–मेल nationalseminarnep@mpm.ac.in पर पहुँच जाना चाहिए। शोध–पत्र ए–4 आकार के कागज पर कम्पोज होना चाहिए। हिन्दी भाषा के शोध–पत्र वॉकमैन चाणक्या प्रारूप में फॉन्ट साइज 14 में तथा अंग्रेजी भाषा के शोध –पत्र टाइम्स न्यू रोमन प्रारूप में फॉन्ट साइज 12 में होने चाहिए।

पंजीयन

पंजीयन शुल्क शोधार्थियों हेतु रू. 500/– तथा प्राध्यापकों हेतु रू. 700/– निर्धारित है। आमंत्रित अतिथियों/ विषय–विशेषज्ञों को पंजीयन कराने की आवश्यकता नहीं होगी। पंजीयन शुल्क बैंक ड्राफ्ट के रूप में **'प्राचार्य, महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़'** के नाम से अथवा नकद संगोष्ठी के समय पंजीकरण के दौरान देय अनुमन्य होगा।

यात्रा/आवास/भोजन-व्यवस्था

आमंत्रित अतिथियों एवं विषय विशेषज्ञों को उनके आने–जाने का व्यय आयोजन समिति द्वारा देय होगा। सभी के आवास एवं भोजन की व्यवस्था आयोजकों की ओर से निःशुल्क रहेगी किन्तु आने की पूर्व सूचना देना आवश्यक है।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद : एक दृष्टि में

जब देश पराधीन था। जनता विपन्न थी। ज्ञान कौशल के अभाव में स्वाभिमान और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की चेतना का जागरण दुष्कर था। स्वतंत्रता संग्राम के एक सशक्त सिपाही महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज अपनी संकल्प शक्ति के बल पर आजादी की लड़ाई के एक प्रमुख शस्त्र के रूप में शैक्षिक क्रान्ति के पथ पर भी आगे बढ़े। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की 1932 ई. में स्थापना कर शिक्षा–स्वास्थ्य को सेवा का पर्याय बनाया। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा सिविल लाइन्स, गोरखपुर में महाराणा प्रताप इण्टर कालेज की स्थापना महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् का पहला कदम था।

महाराणा प्रताप डिग्री कॉलेज एवं महाराणा प्रताप महिला डिग्री कॉलेज की स्थापना महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् का अगला पड़ाव था। तदनन्तर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने दोनों महाविद्यालयों को गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु समर्पित किया और विश्वविद्यालय की स्थापना के आधार स्तम्भ बने। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय का परिसर आज भी 'महाराणा प्रताप परिसर' के नाम से जाना जाता है।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा वर्तमान में चार दर्जन से अधिक शिक्षण–प्रशिक्षण, चिकित्सा, तकनीकी तथा सेवा संस्थाएँ संचालित हो रहीं हैं। महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर इसी महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित संस्था है।

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़ के प्रबंधक गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज, माननीय मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश, की स्पष्ट दृष्टि है कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद एवं महाराणा प्रताप महाविद्यालय की स्थापना लोक कल्याणार्थ शिक्षा को सेवा एवं साधना का माध्यम बनाने के लिए की गई। इस संस्था का दर्शन एवं लक्ष्य है कि इस संस्था से अध्ययन करने वाला युवा अत्याधुनिक ज्ञान–विज्ञान तथा कला की कालोचित शिक्षा ग्रहण करने के साथ–साथ राष्ट्र एवं समाज के प्रति सहज निष्ठा और श्रद्धा का पाठ पढ़े। भारतीय जीवन दर्शन का वह अनुगामी बनें। उनका कहना है कि प्रगति और परम्परा राष्ट्रीय–सामाजिक विकास रथ के दो पहिये हैं, ऐसे में अत्याधुनिक संसाधनों, सूचना एवं संचार माध्यमों के उपयोग के साथ अध्यापन तथा भारतीय जीवन दर्शन के प्रति श्रद्धा भाव पैदा करना इस महाविद्यालय का मिशन है।

गोरखपुर

गोरखपुर महायोगी गुरु गोरखनाथ की तपोभूमि है। यह नगर उत्तर–पूर्व रेलवे का मुख्यालय होने के कारण देश के लगभग सभी शिक्षा केन्द्रों/ महानगरों से रेल, सड़क तथा वायु मार्ग से जुड़ा हुआ है। नगर के पार्श्व में अनेक दर्शनीय एवं ऐतिहासिक स्थल स्थित हैं। भगवान बुद्ध का गृहनगर कपिलवस्तु (सिद्धार्थनगर जनपद में स्थित वर्तमान पिपहरवा) यहाँ से लगभग 90 किमी. की दूरी पर है। गोरखपुर नगर से भगवान बुद्ध की निर्वाण–स्थली कुशीनगर 50 किमी. की दूरी पर स्थित है। मध्ययुगीन सन्त एवं समाज सुधारक तथा हिन्दू–मुस्लिम एकता के पोषक सन्त कबीर की निर्वाण स्थली मगहर यहाँ से 20 किमी. दूरी पर स्थित है। यहाँ से नेपाल सीमा की दूरी लगभग 100 किमी. है। नेपाल के दर्शनीय स्थलों के भ्रमण के लिए सड़क–मार्ग से सुगमतापूर्वक जाया जा सकता है। काठमाण्डु गोरखपुर से 400 किमी. की दूरी पर है। इन समस्त स्थलों की यात्रा बस अथवा टैक्सी द्वारा सरलतापूर्वक की जा सकती है। नगर–क्षेत्र में भी अनेक दर्शनीय स्थल हैं, जिनमें गोरखनाथ–मंदिर, गीता वाटिका, गीता प्रेस, विष्णु मंदिर आदि प्रमुख हैं। अक्टूबर माह में गोरखपुर का मौसम वर्षा से परिपूर्ण एवं आर्द्र रहता है। तापमान सामान्य बना रहता है।